Raj Express (Indore), 8th September 2021, Page-11

राज एक्सप्रेस | महानगर

कंपनियों की सॉफ्ट लैंडिंग को प्रभावी ढंग से सुरक्षित करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर

आईआईटी इंदौर करेगा स्टार्टअप को आगे बढ़ाने के लिए काम

इंदौर ■ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर और भारतीय एमएसएमई के इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग (ईएसडीएम) और सूचना प्रौद्योगिकी ने भारत में स्टार्ट-अप और एसएमईस के विकास में ज्ञान, सर्वोत्तम अभ्यास और प्रौद्योगिकी समर्थन को आगे बढ़ाने व साझा करने के लिए एमओयू साइन किया। प्रोफेसर नीलेश कुमार जैन, निदेशक (कार्यवाहक) ने कहा, एमओयू के अनुसार दोनों पक्ष संरचित कार्यक्रमों के माध्यम से स्टार्टअप और एसएमई के त्वरण को आगे बढ़ाने के लिए काम करेंगे। दोनों संगठनों की ताकत को संरेखित करते हुए संयुक्त शोध किया जाएगा। कंपनियों की सॉफ्ट लैंडिंग को प्रभावी ढंग से सुरक्षित करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, बिजनेस काउंसलिंग और मेंटरशिप प्रदान की जाएगी। प्रौद्योगिकी निवेश और व्यावसायीकरण के माध्यम से आर्थिक विकास के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए खुला संचार स्थापित किया जाएगा।

पुरस्कारों की हैं 18 श्रेणियां: दोनों संगठन आत्मनिर्भर भारत पर ध्यान केंद्रित करने वाले नवोन्मेषकों को मान्यता देने के लिए राष्ट्रीय नवाचार पुरस्कारों की सह-मेजबानी करेंगे। डॉ. संतोष कुमार विश्वकर्मा, आईआईटी इंदौर के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट की फैकल्टी ने कहा पुरस्कारों की 18 श्रेणियां हैं और प्रत्येक श्रेणी के लिए केवल 40 प्रविष्टियों तक ही सीमित रहेंगी। कुछ श्रेणियां में से एयरोस्पेस/ मिलिट्री/ डिफेंस इनोवेशन ऑफ द इयर, ऑटोमेटिव प्रोडक्ट ऑफ द इयर, एनवायर्नमेंटल लीडरशिप अवॉर्ड, इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरर ऑफ द इयर और एक्सीलेंस इन इनोवेशन हैं। सभी प्रविष्टियों को अवधारणा, मूल्य, वितरण और प्रभाव स्थिरता, सामाजिक उत्तरदायित्व, क्षमता पर आंका जाएगा। वैश्विक मानकों से मेल खाने वाले स्वदेशी इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद के निर्माण के लिए सम्मानित नवाचार का भारतीय ईएसडीएम क्षेत्र द्वारा व्यावसायीकरण किया जाएगा।

स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर चैलेंज में 30 फायनलिस्ट टीमों में बनाई जगह

आईआईटी इंदौर ने स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर चैलेंज में भाग लेने वाली 6,619 टीमों (10 हजार से अधिक प्रतिभागियों के साथ) में 30 फायनलिस्ट टीमों सूची में जगह बनाई है। ये टीमें अब स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसरों का उपयोग करके अपने हार्डवेयर प्रोटोटाइप को ओर विकसित करेंगी ताकि अंतिम दौर में अपने अभिनव समाधानों का प्रदर्शन किया जा सके। टीम लीडर गोपाल राउत, पीएचडी स्टूडेंट और टीम के सदस्यों/ सहयोगियों सौरभ करकुन, शावेज मलिक, जोगेश कुमार, रिभुदास पुरकायस्थ, सुधीर रेड्डी ने चुनौती के लिए टेरेन मॉनिटरिंग और टेरेन मॉडिफाइंग एक्टर्स की पहचान के लिए अर्ध-स्वायत्त ड्रोन नामक एक परियोजना प्रस्तुत की है। प्रोफेसर जैन ने कहा यह खास पल है कि हमें स्वदेशी माइक्रोप्रोसेसर चैलेंज के लिए फायनल टीम में सूचीबद्ध किया गया है। यकीन है कि आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत, हम स्वदेशी कम्प्यूटर हार्डवेयर की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम होंगे, जो विभिन्न डोमेन में तैनात हर स्मार्ट डिवाइस का हिस्सा होगा, जिसमें सार्वजनिक उपयोगिता सेवाओं के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर कमोडिटी उपकरणों तक शामिल हैं।